टिश्यू इंजीनियरिंग

तैयार हो रहा है

इंसान और जानवर का हाइब्रिड

क्या होगा जब प्रयोगों के लिए नहीं बचेंगे जानवर

क्या आप जानते हैं कि पूरी दुनिया में वैज्ञानिक प्रतिवर्ष 16,55,766 चूहों और खरगोश पर प्रयोग करते हैं। इन प्रयोगों में यह सभी चूहे या तो दम तोड़ देते हैं या फिर इनके शरीर में इस तरह के परिवर्तन हो जाते हैं कि यह अपनी प्रजाति से बिल्कुल अलग-थलग पड़ जाते हैं। इस बारे में तमाम संस्थाएं अक्सर ही विरोध प्रदर्शन करती रहती हैं। बेजुबानों पर अत्याचार करने के नाम पर अक्सर ही यह मांग की जाती है कि प्रयोगशाला में जानवरों का इस्तेमाल रोका जाए। लेकिन यहां प्रश्न यह भी उठता है कि यदि प्रयोग नहीं होंगे तो जीवन आगे कैसे बढ़ेगा। इंसान का जीवन जानवरों से कहीं ज्यादा मूल्यवान है। इसमें कोई दो राय नहीं कि इंसानों की तरह जानवरों को भी जीने का पूरा हक है। लेकिन किमेरा तकनीक के जरिये यदि इंसानों और जानवरों के जीन को मिलाकर सभी उद्देश्यों की पूर्ति हो गई तो कम होते जीवों की नयी प्रजाति विकसित करने में कोई दिक्कत नहीं आएगी।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि जिस तेजी से चूहों और खरगोश को प्रयोगों के नाम पर खत्म किया जा रहा है, उससे आने वाले समय में इनका अस्तित्व ही नहीं रहेगा। तब वैज्ञानिक किन जीवों पर प्रयोग करेंगे। इस पर वैज्ञानिक जरूर सचेत हैं। इस समय प्रयोगशाला में जितने भी चूहे और खरगोशों पर प्रयोग हो रहे हैं, उनमें काफी सावधानी बरती जा रही है। इस पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है कि बेवजह या लापरवाही के कारण इन बहुमूल्य जीवों की मृत्यु न हो। क्योंकि अभी किमेरा में कुछ भी खास नहीं हो पाया है। इस क्षेत्र में ठोस परिणाम निकालने के लिए कई वर्ष लग सकते हैं। जब वैज्ञानिकों से यह प्रश्न किया जाता है कि वह जीवों की जगह प्रयोग के लिए कुछ और विकल्प क्यों नहीं निकालते तो इस पर वह एक ही तर्क देते हैं। पूरी दुनिया में हर साल भोजन के रूप में लाखों जानवरों को मार दिया जाता है तब संस्थाएं आवाज क्यों नहीं उठातीं? सिर्फ स्वाद के लिए बेजुबानों का खत्म कर देना क्या सही है? हम तो मानव की भलाई के लिए जानवरों को इस्तेमाल कर रहे हैं। इसमें अगर उनकी जान जाती भी है तो यह भोजन के रूप में इस्तेमाल करने से कहीं अच्छा है। भोजन में तो उनकी हत्या होती है, जबकि यहां वह भलाई के काम के लिए खुद का बलिदान देते हैं। वैज्ञानिकों के इस तथ्य में कितनी मजबूती है, यह तो नहीं बताया जा सकता। लेकिन इतना तो तय है कि जानवरों की संख्या लगातार घट रही है। अब खरगोश और सफेद चूहे भूले-भटके नजर आते हैं। जिस तेजी से इन पर वैज्ञानिक प्रयोग किए जा रहे हैं, उससे यह तो अनुमान लगाया जा सकता है कि आने वाले कुछेक वर्षों में ही वैज्ञानिकों को प्रयोगों के लिए किसी और जीव की बलि देनी होगी, क्योंकि जल्द ही चूहे और खरगोश पूरी तरह गायब होने की कगार पर हैं।

हॉलीवुड फिल्म 'स्प्लाइस' इन दिनों पूरी दुनिया में चर्चा में है। विनसेंजो नताली की यह फिल्म साइंस फिक्शन पर आधारित है। इसमें मनुष्य और जानवरों के हाइब्रिड पर किए गए प्रयोगों के भयावह परिणाम दिखाए गए हैं। फिल्म की कहानी के अनुसार जानवरों की नयी प्रजातियाँ विकसित करने के लिए वैज्ञानिक तरह-तरह के प्रयोग करते रहते हैं। कुछ वैज्ञानिक इस प्रयोग में मनुष्य के डीएनए भी इस्तेमाल कर लेते हैं। इसके परिणाम स्वरूप अर्धमानव और अर्धपशु 'ड्रेन' का जन्म होता है, जो आगे चलकर भयानक उत्पात मचाता है। 'स्प्लाइस' को पूरी दुनिया में हाथों-हाथ इसलिए लिया जा रहा है, क्योंकि कई देशों में जानवरों और इंसानों के हाइब्रिड पर तरह-तरह के प्रयोग हो रहे हैं। नैतिकवादी इन प्रयोगों के खिलाफ हैं। उनका कहना है कि इस तरह के प्रयोगों से प्रकृति के साथ छेड़छाड़ हो रही है, जिसके परिणाम आगे चलकर भयावह हो सकते हैं। 'स्प्लाइस' में जो कुछ भी दिखाया गया है, उसे फिलहाल तो सिर्फ कल्पना ही माना जा सकता है।

जानवरों और इंसानों के हाइब्रिड पर तरह-तरह के प्रयोग होना आज की बात नहीं है। यह पिछले दो हजार वर्षों से सोच, प्रयोग या कल्पना के रूप में हो रहा है। भारतीय माइथोलॉजी में कई ऐसे अवतार हैं, जो आधे इंसान और आधे जानवर हैं। नृसिंह हों या गणेश, दोनों को ही इंसान और जानवर का मिश्रण कहा जा सकता है। इंसान और जानवरों के मिश्रण का उदाहरण सिर्फ भारतीय मान्यताओं में ही मौजूद नहीं हैं। ग्रीक माइथोलॉजी में किमेरा नाम के एक अद्भुत जीव का वर्णन मिलता है जिसका शरीर सिंहनी जैसा है और पीठ पर बकरी का मुँह उगा हुआ है। उसकी पूँछ साँप जैसी है। इसी जीव के नाम के आधार पर वैज्ञानिक जानवरों और इंसानों की कोशिकाओं को लेकर जो भी प्रयोग करते हैं, उसे किमेरा एक्सपेरिमेंट भी कहा जाता है। इसलिए वैज्ञानिक यदि इंसान और जानवरों के बीच हाइब्रिड एक्सपेरिमेंट कर रहे हैं तो इसमें नया कुछ भी नहीं है।

वैज्ञानिकों का दावा है कि हाइब्रिड एक्सपेरिमेंट का मुख्य उद्देश्य प्रकृति से छेड़छाड़ नहीं बल्कि इसके जरिये उन असाधारण बीमारियों का इलाज खोजा जाना है, जो अभी तक लाइलाज हैं। इसके अलावा शरीर के सभी अंगों का प्रत्यारोपण या एक अंग के खराब हो जाने पर उसकी जगह नया अंग उगाना संभव बनाना है। वैज्ञानिकों का तर्क है कि किमेरा एक्सपेरिमेंट से एड्स का इलाज खोजा जा सकता है, कैंसर जैसी बीमारियों से लड़ने के लिए प्रतिरोधक क्षमता विकसित की जा सकती है और किसी दुर्घटना या बीमारी के चलते क्षतिग्रस्त हो चुके अंग को बदलने के लिए नया अंग तक उगाया जा सकता है।

किमेरा को लेकर दुनियाभर में पिछले 15 वर्षों में जो तेजी आई है, उसे अभूतपूर्व ही माना जा सकता है। किमेरा मुख्यत: नॉन-ह्यूमन जूलॉजी का हिस्सा है। इसमें चार तरह की कोशिकाओं को मिलाकर एक नये किस्म के जीव की संरचना तैयार करने की कोशिशें की जाती हैं। यह कोशिकाएं दो अलग-अलग जानवरों की होती हैं। फिलहाल किमेरा एक्सपेरिमेंट में जानवरों की कोशिकाओं के साथ इंसान की कोशिकाओं को जेनेटिकली मॉडीफाइड करके हाइब्रिड कराया जा रहा है। इस तरह के प्रयोगों के परिणाम भी काफी सकारात्मक हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि इससे तमाम रोगों का इलाज तो संभव होगा ही, इसके अलावा जीवों की उन प्रजातियों को भी बचाया जा सकेगा जो तेजी से विलुप्त हो रही हैं।

जानवरों और इंसानों के बीच हाइब्रिड एक्सपेरिमेंट कराये जाने के कार्य तो लंबे समय से हो रहे हैं लेकिन उनमें सफलता किसी को भी नहीं मिल पाई है। इस तरह के प्रयोगों को लेकर कई तरह की खबरें आती रही हैं। कुछ वर्षों पहले न्यूयॉर्क टाइम्स में छपी एक तस्वीर ने पूरी दुनिया में तहलका मचा दिया था। इस तस्वीर में एक बिना बालों वाले चूहे की पीठ पर इंसान का कान उगा हुआ दिखाया गया था। इस फोटो के कैप्शन में लिखा हुआ था कि यह जेनेटिकली इंजीनियर्ड चूहा है, वैज्ञानिकों के प्रयास से इसकी पीठ पर इंसान का कान उग आया है। जबकि सच्चाई यह थी कि यह चूहा जेनेटिकली इंजीनियर्ड नहीं था और न ही इसकी पीठ पर उगा हुआ कान इंसानी कोशिकाओं से बना हुआ था। दरअसल वर्ष 1989 में चार्ल्स वेकेंटी नाम के वैज्ञानिक ने चूहे और गाय की कोशिकाओं को हाइब्रिड कराकर कुछ प्रयोग शुरू किए। चूहों पर किए गए इस प्रयोग में लंबे समय तक कोई परिणाम नहीं निकले, लेकिन वर्ष 1995 में एक चूहे में कुछ ऐसा परिवर्तन हुआ जिससे पूरी दुनिया में हलचल मच गई। चूहे की पीठ पर एक कान उग आया, जो बिल्कुल इंसान के कान जैसा था। दरअसल इस प्रयोग में वैज्ञानिकों ने चूहे की पीठ में मनुष्य के कान जैसे पॉलीमर के ढांचे में गाय की कोशिकाएं रख दीं, जो बाद में कान के रूप में विकसित हो गई थीं। इसलिए इसे जेनेटिक इंजीनियरिंग का कोई प्रयोग नहीं कहा जा सकता।

ईयर माउस

ईयर माउस के नाम से यह प्रयोग काफी चर्चा में रहा। ईयर माउस में मानव कोशिकाओं का इस्तेमाल नहीं हुआ था। लेकिन इस घटना के बाद हाइब्रिड एक्सपेरिमेंट के जरिये वैकल्पिक कान का निर्माण करने के रास्ते खुल गए। कई प्लास्टिक सर्जनों ने ऑपरेशन के जरिये कान अटैच करने की तकनीक विकसित कर ली। इससे उन लोगों को काफी फायदा हुआ, जो किसी दुर्घटना के कारण अपने कान खो चुके थे। टिश्यू इंजीनियरिंग के इस प्रयोग की शुरुआत हाइब्रिड एक्सपेरिमेंट की सफलता के बाद ही हुई। नवंबर, 2009 को साइंस डेली पत्रिका में छपे एक लेख में वैज्ञानिकों द्वारा गोल्डन ईयर माउस के आविष्कार की चर्चा की गई थी। इस लेख में चूहों के कानों में ऐसी क्षमता विकसित कर दी गई थी जिससे उम्र बढ़ने के बावजूद उनकी सुनने की क्षमता सामान्य से कहीं ज्यादा थी। रोचेस्टर यूनिवर्सिटी के मेडिकल सेंटर में हुए इस अनोखे प्रयोग से दुनियाभर के उन बुजुर्गों या अन्य लोगों को काफी फायदा होगा, जो एक उम्र पर पहुंच कर सुनने की क्षमता खो बैठते हैं या बहुत कम सुनने लगते हैं। रॉबर्ट फ्रिसिना के इस प्रयोग में ब्रीडिंग टेक्नोलॉजी का सहारा लिया गया है। सुनने की क्षमता खो चुके चूहों के मस्तिष्क पर कुछ नवजात चूहों के बच्चों के जीन ब्रीड कराए। हाइब्रिड तकनीक के इस प्रयोग के परिणाम काफी अच्छे रहे। शोधकर्ताओं ने कुछ ही समय में यह तथ्य जान लिया कि इस प्रयोग के जरिये सुनने की क्षमता को न सिर्फ वापस लाया जा सकता है बल्कि उम्र के लगातार बढ़ने पर भी यह क्षमता वैसी की वैसी ही बनी रहेगी।

किमेरा पर हुए शोधकार्यों की कहानी तो काफी पुरानी है। बायोलॉजिकल रिसर्च में दो अलग-अलग ऑर्गेनिज्म की कोशिकाओं को मिलाकर जो भी नया स्वरूप तैयार होगा, उसे किमेरा के अंतर्गत रखा जाएगा। इसे हाइब्रिड से अलग माना जाता है। हाइब्रिड की तकनीक में मुख्यत: एक ही प्रजाति के दो अलग-अलग जीवों के जीन को मिलाकर तैयार की गई नस्ल आती है, जैसे घोड़े और गधे के जीन को मिलाकर यदि कोई नयी प्रजाति तैयार हो तो इसे हाइब्रिड का उदाहरण माना जाएगा। इसके उलट किमेरा में अलग-अलग प्रजातियों, यहां तक कि इंसान और जानवरों के आनुवांशिक लक्षणों और कोशिकाओं को मिलाकर एक नये जीवन की उत्पत्ति की जाती है। वर्ष 1984 में किमेरिक 'जीप' की उत्पत्ति ने इस क्षेत्र में प्रयोगों की पहल कर दी। जीप मुख्यत: बकरी (गोट) और भेड़(शीप) की कोशिकाओं को मिलाकर जन्म लेने वाला एक नयी प्रजाति का जीव था। इसमें बकरी और भेड़ दोनों के ही गुण थे। इस प्रयोग का मुख्य उद्देश्य था, ऐसे जीवों की रक्षा करना जो गायब होने की कगार पर हैं। आने वाले समय में यदि भेड़ या बकरी में से कोई एक जानवर पूरी तरह खत्म हो जाएगा तो जीप उसकी भरपाई करने के लिए मौजूद रहेगा। इस तरह की प्रजाति प्रयोगशाला में तैयार की जाती है, यह कुदरती नहीं होती। इसलिए इनके अस्तित्व या जीवन के बारे में कोई भी पुख्ता तथ्य या समय-सीमा का दावा नहीं किया जा सकता। इस तरह के किमेरा एनिमल कितने समय तक जीवित रहेंगे या इनके गुण हाइब्रिड एनिमल की तरह ही होंगे, इस बारे में कोई भी ठोस प्रमाण देना मुश्किल रहता है। अभी तक किमेरा एक्सपेरिमेंट के चलते किसी भी ऐसे चरित्र या जीव की रचना नहीं की गई है, जो पूरी तरह से अस्तित्व में आ चुका हो और सामान्य जीवन व्यतीत कर रहा हो।

इस क्षेत्र में ठोस परिणाम निकालने के लिए लगातार प्रयोग हो रहे हैं। वर्ष 2003 में चीन की शंघाई मेडिकल यूनिवर्सिटी में शोधकर्ताओं ने यह दावा किया कि उन्होंने मानव त्वचा की कोशिकाओं और मृत खरगोश के अंडाणुओं को मिलाकर दुनिया के पहले ह्यूमन किमेरिक भ्रूण का निर्माण कर लिया है। यह भ्रूण इंसान और खरगोश के मिले-जुले गुणों वाला है। इस भ्रूण पर प्रयोगशाला में लंबे समय तक काम होता रहा, लेकिन अभी तक इसके कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आए हैं। इस विधि से तैयार भ्रूण का इस्तेमाल फिलहाल तो स्टेम सेल निकालने के लिए किया जा रहा है। इसके अलावा किमेरा तकनीक के जरिये साल्क इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं ने चूहे पर मानव कोशिकाओं से बने लिवर का प्रत्यारोपण किया। प्रयोग में वैज्ञानिकों ने एक ऐसे चूहे को चुना, जिसका लिवर खराब था। उन्होंने इस लिवर की जगह ऐसा लिवर लगा दिया, जो 95 प्रतिशत मानव कोशिकाओं से बना था। इस प्रयोग के पीछे वैज्ञानिकों का मुख्य उद्देश्य था, हेपेटाइटिस का इलाज ढूंढना। आमतौर पर छोटे जानवर इस बीमारी से पीड़ित नहीं होते। लेकिन यह चूहा मानव कोशिकाओं से बने लिवर के प्रत्यारोपण के बाद न सिर्फ हेपेटाइटिस से पीड़ित हुआ बल्कि चूहे पर हेपेटाइटिस के इलाज से सम्बंधित दवाओं का असर भी हुआ। वैज्ञानिकों का मानना है कि इस प्रयोग से मनुष्य के लिवर में होने वाली तमाम तरह की बीमारियों के इलाज का रास्ता खोजा जा सकेगा। कुछ वर्ष पहले मिनिसोटा के मेयो क्लीनिक में वैज्ञानिकों ने सुअर के शरीर में इंसान के रक्त को प्रवाहित करने का अनोखा प्रयोग किया। वर्ष, 2008 में ब्रिटिश शोधकर्ताओं ने गाय के अंडाणु का न्यूक्लियस निकाल कर उसकी जगह मानव कोशिकाओं का न्यूक्लियस फिट कर दिया। इस शोध से पार्किन्संस डिजीज के इलाज में मदद मिलेगी। इंसान और जानवरों की कोशिकाओं के मिश्रण से अब तक जितने भी प्रयोग किए गए हैं, उनमें से ज्यादातर के परिणाम सकारात्मक ही मिले हैं।

लेकिन दुनियाभर में किमेरा प्रयोगों पर सवालिया निशान लगाए जा रहे हैं। नैतिकतावादियों के अनुसार इससे कुछ भी अच्छा नहीं हो सकता। दुनिया के कई देशों में तो इंसान और जानवरों के हाइब्रिड पर रोक लगा दी गई है। कनाडा इनमें से एक है। कनाडा में किमेरा एक्सपेरिमेंट पर कोई भी काम नहीं हो रहा है। लेकिन यहां प्रश्न यह उठता है कि जिस काम से इंसान को फायदा हो, उसे अंजाम देने में क्या हर्ज है? हाइब्रिड टेक्नोलॉजी के जरिये यदि इंसान और जानवरों के स्वरूप और गुण मिल जाएं तो इसमें गलत क्या होगा। 'स्प्लाइस' फिल्म में इस तरह के प्रयोगों के परिणाम को भयावह दिखाया गया है, लेकिन सच्चाई तो इससे कोसों दूर है। अभी तक किमेरा पर जो भी प्रयोग हुए हैं, उनमें से किसी के भी परिणाम ऐसे नहीं पाये गए जिसमें किसी तरह के खतरे की आशंका नजर आ रही हो। बल्कि इसके हर एक कदम के आगे बढ़ने से लाइलाज बीमारियों को दूर करने सम्बंधी आशाएं और प्रबल हो रही हैं। किमेरा तकनीक यदि पूरी तरह सफल हो गई तो वह दिन दूर नहीं जब एड्स जैसी घातक बीमारी का सफल इलाज किया जा सकेगा। इसके साथ ही मानव अंगों का प्रत्यारोपण व जानवरों को बचाने के लिए उनकी विलुप्त प्रजातियों के स्वरूप को थोड़ा-बहुत बदल कर नई प्रजाति विकसित कर ली जाएगी। विज्ञान हर मायने में फायदेमंद है, बशर्ते इसका प्रयोग सकारात्मक रूप में किया जाए।

- सपना बाजपेयी मिश्रा

स्वतंत्रता दिवस परिशिष्ट के लिए रचनाएँ आमंत्रित

लेख

विषय: मेरे आज़ाद देश को लीलती हाय रे ये डायन महंगाई!

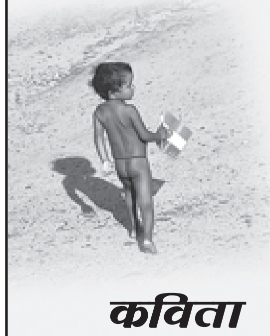

महंगाई के कारण, निवारण व विवरण

शब्द सीमा : अधिकतम 700 शब्द

कोई आयु सीमा नहीं

कविता

विषय : देशभक्ति

आयु सीमा : 15 वर्ष की उम्र तक के बच्चे

उक्त दोनों वर्गों से 10-10 चुनिंदा रचनाएँ स्वतंत्रता दिवस परिशिष्ट में प्रकाशित की जाएँगी और इन रचनाओं की मानदेय राशि रु. **300=00** का चेक रचनाकारों को डाक द्वारा भेजा जाएगा।

रचनाकार अपना पूरा पता रचना के साथ लिख कर भेजें व जो रचनाकार अपनी अप्रकाशित रचना वापस चाहते हों वे रचना के साथ अपना पता लिखा एक लिफाफा अवश्य भेजें।

अंतिम तिथि : गुरुवार, 5 अगस्त, 2010

वास्तु-दोष एवं समाधान

वास्तु को अपनायें, राहत पायें

जीवन की हर परेशानी चाहे वह छोटी हो या बड़ी, इसके लिए घर के वास्तु को भी जिम्मेदार माना जा सकता है। घर की हर दिशा, हर कोना सुख-समृद्धि या तनाव का कारण बनता है। क्यों और कैसे? इन सवालों के जवाब इस स्तम्भ में दिये जाएँगे। वास्तु संबंधी अपनी समस्याएँ एवं आशंकाएँ हमें लिख भेजिए। श्री टी. आर. भंडारी इस स्तम्भ में प्रति शुक्रवार आपके सवालों का जवाब देंगे।

जिज्ञासा: मेरे भूतल पर निर्मित मकान के पूर्व, उत्तर एवं पश्चिम में पड़ोसी के मकान तथा दक्षिण में सड़क है। मेरे मकान का पूर्व-आग्नेय का हिस्सा बढ़ा हुआ है, जिसमें एक भूमिगत पानी का टैंक बना हुआ है। मैं पूर्व-आग्नेय में स्थित इस भूमिगत पानी के टैंक को मिट्टी से भर कर बन्द करके, मकान के पूर्व-उत्तर में स्थित हॉल के उत्तर-ईशान में एक नया भूमिगत पानी का टैंक बनवाना चाहता हूँ, लेकिन एक वास्तु विशेषज्ञ ने मुझे सलाह दी है कि मकान के अन्दर भूमिगत पानी का टैंक कभी नहीं बनवाना चाहिए। कृपया बताये कि मैं क्या करू, क्योंकि मैं बहुत समस्याओं का सामना कर रहा हूँ।

समाधान: मकान के पूर्व तथा उत्तर में खुला स्थान नहीं होने की स्थिति में मकान के अन्दर सही स्थान पर भूमिगत पानी का टैंक बनाना बिल्कुल भी गलत नहीं होता है।

आपके मकान के पूर्व-आग्नेय में स्थित भूमिगत पानी के टैंक को मिट्टी से भरकर बंद करके, मकान के उत्तर-ईशान में नया भूमिगत पानी का टैंक बनाने के बाद, ना सिर्फ पूर्व-आग्नेय में स्थित भूमिगत पानी का टैंक होने के कारण पैदा होने वाले वास्तु दोष के दुष्परिणामों से आप निवृत्ति प्राप्त करेंगे, बल्कि आपके आर्थिक स्त्रोत में भी वृद्धि होगी।

यह फेरबदल करवाने के बावजूद भी आपकी सभी समस्याओं का समाधान होना असंभव है, क्योंकि मकान का पूर्व-आग्नेय का हिस्सा बढ़ा हुआ होने के कारण मकान की पूर्व-ईशान दिशा लुप्त हो गयी है।

सभी समस्याओं से स्थाई तौर पर निवृत्ति प्राप्त करने के लिए मकान के बढ़े हुए पूर्व-आग्नेय के हिस्से को दीवार बनाकर मकान से अलग करने के अतिरिक्त और कोई भी विकल्प कारगर साबित नहीं हो सकता, क्योंकि ईशान कट जाने का घातक वास्तु दोष कई तरह की समस्याएँ पैदा करने में अहम भूमिका निभाता है।

मकान के अलग किये गये, बढ़े हुए पूर्व-आग्नेय के हिस्से के दक्षिण-आग्नेय में दरवाजा लगाकर इस हिस्से को सड़क की तरफ से उपयोग करें, लेकिन किसी भी हालत में मकान के अन्दर से दरवाजा लगाकर नहीं।

मकान की उत्तर दिशा 10-15 डिग्री या इससे ज्यादा (प्लस) होने की स्थिति में पूर्व-ईशान तथा झुकी हुई (माईनस) होने की स्थिति में उत्तर-ईशान में, करीब दो

टी. आर. भंडारी
फ्लैट नं. 203,
तीसरा माला, 3-4-462,
साई अवन्ति विल्ला
वाई.एम.सी.ए.
नारायणगुड़ा, हैदराबाद - 29
फो. 94400-65767,
93930-65767
040-27560202

फीट गोलाई में छत को काट कर उसमें लोहे की जाली लगाये और काटी गयी छत के ऊपर, पिरामिड के आकार में प्लास्टिक के शीट की छत बनाये। यह परिवर्तन करवाने से आपके मकान के पूर्व तथा उत्तर में पड़ोसी के मकान होने के कारण मकान के पूर्व-उत्तर में अवरुद्ध होने वाली सकारात्मक ऊर्जा, छत के द्वारा मकान में निर्विघ्न प्रवाहित होगी, जो कि आपके लिए बहुत ज्यादा लाभदायक होगी।

जिज्ञासा: मेरे मकान के दक्षिण-पूर्व में रसोई-घर तथा उत्तर-पश्चिम में स्नानघर/शौचालय बना हुआ है। मैं आर्थिक समस्या का सामना कर रहा हूँ। कृपया समाधान बतायें।

समाधान: आपके मकान के दक्षिण-पूर्व में रसोई घर तथा उत्तर-पश्चिम में स्नानघर/शौचालय होना सही है और यह आपकी आर्थिक समस्या का कारण नहीं हो सकते।

आपके मकान में और कोई वास्तु दोष आपकी आर्थिक समस्या के कारण होंगे, जिसे सुधार कर आप आपनी आर्थिक समस्या से समाधान प्राप्त कर सकते है।

इस पते पर पत्राचार करें

वास्तु शास्त्र
डेली हिन्दी मिलाप
5-4-674, कट्टलमंडी,
हैदराबाद - 500 117.

वर्ग पहेली क्रमांक – 1957

बायें से दायें :

1. पानीदार दही 2. क्रम
4. अर्क 6. दृढ़
7. दु:खद घटना की मानसिक चोट
8. रात 9. शोक
10. पीटना 11. स्वाद
13. जाना 14. शहद
16. भागा हुआ 17. पल्ला
19. लेखनी 21. आतंक 22. परिणाम
23. मग्न 25. राष्ट्रपिता के पिता
26. बराबरी का 27. गति

ऊपर से नीचे :

1. एक भाषा 2. ठप्पा, प्रभुत्व
3. अन्यायी 4. मान
5. समान अर्थवाला 6. छेना
7. एक जैसे स्वभाव का
12. कामयाब
15. जोर से
18. एक तरह का पत्थर, जिसपर चोट मारने से आग निकलती है
19. अशक्त
20. चूरमा 22. भीतर
24. कोमल
25. एक राशि

पिछली वर्ग पहेली का उत्तर